वेदी का आकार

नोट—यदि कारणवश वेदी न बन सके तो चौकि,पटिया पीपा आदि से निम्नप्रकार रचना कर कार्य करना चाहिये।

हवन कुण्ड का आकार

उद्देश्यादि

(वसन्त-तिलकाच्छन्द)

प्रावर्तयज्जनहितं खलु कर्मभूमौ,
षट्कर्मणा गृहिवृषं परिवर्त्य युक्त्या ।
निर्वाणमार्ग-मनवद्य मजः स्वयम्भूः,
श्री नाभिसूनुजिनपो जयतात् स पूज्य ॥१॥

श्री जैनसेन—वचना — न्यवगाह्य जैने,
सङ्घे विवाहविधि—रुत्तमरीतिभाजाम् ।
उद्दिश्यते सकलमन्त्रगणैः प्रवृत्ति,
सानातनीं जनकृतामपि संविभाव्य ॥२॥

अन्याङ्गना—परिहृते—र्निजदार वृत्ते-
र्धर्मो गृहस्थ–जनता–विहितोऽयमास्ते ।
प्राच्यप्रवाह इति सन्तति- पालनार्थ—
मेवं कृतौ मुनिवृषे विहितादर. स्यात् ॥३॥

अथ मङ्गलाष्टकम्

(शार्दूलविक्रीडितच्छन्द .)

श्रीमन्नम्र—सुरासुरेन्द्र–मुकुट·प्रद्योतरत्न—प्रभा –
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः ।
ये सर्वे जिनसिद्धसूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधव.,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरव, कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥१॥

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां, जन्मा – भिषे–कोत्सवो ।
यो जात परिनिष्क्रमेण विभवो, य केवल-ज्ञान-भाक् ॥
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा, सम्भावितः स्वर्गिभि ।
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं, कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥७॥

आकाशं मूर्त्यभावा-दघकुलदहना-दग्निरुर्वी क्षमाप्त्या ।
नैःसङ्गाद्वायुरापः प्रगुणशमतया, स्वात्मनिष्ठैः सुयज्वा ॥
सोमः सौम्यत्वयोगाद्-रविरिति च विदुस्तेजस सन्निधानाद् ।
विश्वात्मा विश्वचक्षु-र्वितरतु भवतां, मङ्गलं श्रीजिनेश ॥८

इत्थं श्री जिनमङ्गलाष्टकमिदं, सौभाग्यसम्पत्करं ।
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थङ्कराणां मुखा. ॥
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैः, धर्मार्थकामान्विता ।
लक्ष्मी र्लभ्यत एव मानवहिता, निर्वाणलक्ष्मीरपि ॥९॥

॥ इति मङ्गलाष्टकम् ॥

फेरे (भांवर) का मुहूर्त—कई जगह भांवर (फेरे) के मुहूर्त उल्लंघन कर दिया जाता है किन्तु इससे वर और कन्या दो को भारी हानि होती है। इसलिये प्रदानविधि से लेकर सप्तपदी तक के कार्य तो विवाहार्थ निश्चित मुहूर्त में ही अवश्य हो जाना चाहिये।

सप्त ऋद्धियों के अधिपति, अष्टाङ्ग निमित्तों के आसन्न ।
ऐसे भवजलसेतु जिनेश्वर, सदा करें मंगल उत्पन्न ॥
ऊर्जयन्त सम्मेदशिखर, कैलाश शृङ्ग श्री पावापूर ।
करे ऋषभ, नेमीश, वीर, की, ये निर्वाणभूमि दुख-चूर ॥
वासुपूज्य की चम्पा नगरी, करे प्राणियों के दुख दूर ।
पुण्यभूमियाँ रखें अमर, यह चढ़ता मंगलमय सिन्दूर ॥
व्यन्तरवासी, भवन ज्योतिषी, वैमानिक निवास-सुख खान ।
जम्बुवृक्ष गिरिराज कुलाचल, चैत्य शालमलि विटप महान
कुण्डलनगर दीप नदीश्वर, विजयारध आदिक छविमान ।
सकल मानुषोत्तर के पर्वत वा मन्दिर मङ्गल करें महान ॥
गर्भ, जन्म, अभिषेक, महोत्सव, तीर्थङ्कर का क्रम निर्माण ।
परिनिष्क्रमण महोत्सव, केवल, ज्ञानमहोत्सव मय निर्वाण ॥
ऐसे पुण्य महोत्सव फूंके, नवदम्पति में जीवन-प्राण ।
ये महिमेश पञ्च कल्याणक, करे सदा मंगल कल्याण ॥
महिमामयी पंचकल्याणक, मंगल अष्टक परम विशाल ।
पढ़ते, सुनते, जपते हैं जो, भक्तिसहित यह मंगलमाल ॥
अर्थ काम पुरुषार्थ युक्त, सुख, सम्पति धारी उन्नत भाल ।
सहज मोक्षलक्ष्मी पाकर के, बनते हैं सुसमृद्धि-निहाल ॥

--(०)--

वाग्दान, सगाई मुद्दा या टीका

गृहस्थाचार्य खड़ा होकर समस्त पञ्चों के समक्ष वर और कन्या पक्ष की योग्यता का परिचय देकर इस प्रकार कहे कि—पञ्चों की साक्षी से अमुक के पौत्र, अमुक के पुत्र, अमुक जाति और अमुक गोत्र वाले, अमुक नामक वर का सम्बन्ध, अमुक की पौत्री, अमुक की पुत्री, अमुक जाति, अमुक गोत्र और अमुक नामवाली कन्या के साथ करना पक्का (अटल) किया जाता है।

तब पञ्च तीन बार कहें कि सर्वप्रकार उचित है, अवश्य करना चाहिये। कन्या का पिता वर के पिता से कहे कि—

कुटुम्बियों पञ्च और प्रधान पुरुषों की साक्षिपूर्वक मैंने अपनी कन्या आपके सुपुत्र के लिये देना निश्चित किया है। आप अपने सुपुत्र के लिये इसे स्वीकार कीजिये। इसके उत्तर में वर का पिता भी प्रतिज्ञा करे कि—पञ्चों एवं प्रमुखों की साक्षिपूर्वक आपकी कन्या को अपने सुपुत्र के लिये स्वीकार करता हूँ।

पश्चात् कन्या का पिता अपना गोत्र आदि का उच्चारण कर वस्त्राभूषण, ताम्बूल, अक्षत और फल वरके पिता के हाथमें देवे और कहे कि मैं यह कन्या आपके पुत्र को देता हूँ और विवाहहेतु यह द्रव्य भी ग्रहण कीजिये।

उत्तर में वर का पिता भी कहे कि मैं आपकी कन्या को अपने सुपुत्रके लिये स्वीकार करता हूँ तथा वस्त्राभूषण, ताम्बूल, अक्षत और फल आदि भी कन्या के पिता को देवे। गृहस्थाचार्य "क्षेम सर्वप्रजानाम्" इत्यादि पढ़कर सभा-विसर्जन करे।

पश्चात् अपनी जातीय प्रथा के अनुसार कन्या का पिता वर का टीका आदि करे। वर का पिता भी किसी शुभ मुहूर्त में वस्त्राभूषण आदि भेज कर कन्या को अलंकृत करे।

लग्नपत्र लेखन विधि

विवाह के ५ या ७ दिन पूर्व कन्या का पिता किसी शुभ मुहूर्त में इस प्रकार लग्नलेखन करावे।

प्रातः ७ बजे कन्या को स्नान कराकर पवित्र और नवीन वस्त्राभूषण पहनाकर मङ्गलगान गाती हुई सौभाग्यवतियां उस कन्या को गाजे बाजे के साथ जिनमन्दिरजी लिवा जावें। वहां कन्या से दैनिक पूजन मङ्गलाष्टक, सिद्धपूजा और विनायक-यन्त्र पूजा कराई जाय। फिर गाजे बाजे और मङ्गलगान के साथ कन्या को घर लाया जाए।

सन्ध्या के समय इष्टजन और पञ्चों के एकत्रित होने पर वस्त्राभूषणों से अलंकृत कन्या को सौभाग्यवतियों के बीच चौक में उच्चासन पर बिठाया जाय और तिलक किया जाय। पश्चात् अभ्यागत विद्वान इस प्रकार लग्नलेखन की विधि करें।

एक सुन्दर लोटे में १।), हल्दी गांठ १, सुपारी १, पुष्प और थोड़ा जल भरे। कलशपर तीन स्वस्तिक बनावे। मुंह पर एक नारियल रख पीले वस्त्र और पञ्चरङ्ग सूत से उसे बांधकर मङ्गलकलश तैयार करे। फिर एक बाजोटा पर चारों कोने पर घृत के चार दीपक जलावे और बीच में पीले चावलों से एक स्वस्तिक बनावे। उस स्वस्तिक पर मङ्गलकलश स्थापित करे।

फिर हमारे यहां का छपा हुआ लग्नपत्र लेकर मङ्गलाष्टक पढ़ता हुआ पुष्पवृष्टि करे। फिर उस मुद्रित लग्नपत्र के खानों में विवाह आदि की तिथियों और भावर का मुहूर्त लिखे और उस लग्नपत्र में हल्दी गांठ, सुपारी, मूंग, पुष्प और नगद द्रव्य रख

कर पञ्चरङ्गसूत से बाधकर एक थाल मे रखकर सौभाग्यवतियों के बीच बैठी हुई शृङ्गारयुक्त कन्या के कर-कमलों से उस लग्नपत्र का स्पर्श करवा कर पञ्चों को सौंप देवे। पञ्च भी अपने अपने हाथों से उस लग्नपत्र का स्पर्श कर कन्या के पिता को सौंप देवें।

कन्या का पिता उपस्थित सज्जनों का पान सुपारी आदि से सत्कार करे और अपने विश्वस्त व्यक्ति के हाथ उस लग्नपत्र को वर के यहा पहुँचा देवे।

लग्नवाचन विधि

विवाह से कुछ दिन पूर्व वर का पिता अपने घर प लग्नवाचनविधि निम्नप्रकार करावे।

प्रातः ७ बजे वर को स्नान करा कर शुद्ध वस्त्र पहनाकर सौभाग्यवतियों के गान और गाजे बाजे के साथ जिनमन्दिर में जावे। वहां वर स्वयं या किसी विद्वान के सहारे से विधिपूर्वक अभिषेक वा पूजन करे या मङ्गलाष्टक सिद्धपूजन और विनायक यन्त्र पूजन करे। फिर शान्ति विसर्जन कर गाजे बाजे और मङ्गलगान के साथ घर आवे।

रात्रि के समय अपने इष्टजन और पञ्चों के एकत्रित होने पर वस्त्राभूषणों से अलंकृत वर को पञ्चों के बीच एक बाजोट

या पाटा पर पूर्व या उत्तर मुख करके बिठाया जाय। सौभाग्यवतियां मङ्गलगान गावें और वादित्रनाद कराया जाय। फिर लग्नपत्र-वाचक विद्वान निम्नप्रकार विधि करे।

एक बाजोटे या चौकी पर पीले चावल से पाच स्वस्तिक बनाकर बीच के स्वस्तिक पर कलश में एक रुपया, एक सुपारी, एक हल्दी की गाठ और कुछ पीले चांवल छोडकर जल भर देवे। उस कलश पर पिसी हल्दी से तीन स्वस्तिक (सांथिया) बनाकर पुष्पहार पहनाकर उस पर एक चौमुखा दीपक जलावे।

फिर वाचक विद्वान् जयध्वनि और पुष्पवृष्टि करता हुआ मङ्गलाष्टक या नौ वार णमोकार मन्त्र पढ़कर वरको तिलक कर पुष्पमाला व कन्यापक्ष से आगत वस्त्राभूषण पहिनावे और तश्तरी में रखकर आगत लग्नपत्र वर को सौंपे।

वर भी वह लग्नपत्र दोनों हाथों से लेकर समाज के मुखिया को सौंपे। मुखिया भी तिलक और पुष्पमाला आदि से वाचक विद्वान का सत्कार कर वह लग्नपत्र उन्हें सौंपे। पश्चात् वाचक विद्वान लग्नपत्र वांच कर उपस्थित जनता को सुनावे। इसके बाद वर का पिता उपस्थित समाज का केवल पान, सुपारी वा माला से सम्मान करे। यदि राम का समय हो तो नाश्ता नहीं करावें।

—(•)—

टीका, अलूफा या तोरण विधि

जब बरात और वर गाजे-बाजे के साथ टीका (शिवाल के हेतु कन्या के दरवाजे पर आवे तब दो सौभाग्यवती स्त्रि जल और मङ्गलद्रव्य सहित धातु के दो कलशों को लेकर व पक्ष को देने के लिये बारात के निकट आकर खड़ी हों। त गृहस्थाचार्य पुष्पवृष्टि करता हुआ इस पुस्तक में छपे मङ्गलाचरण और मङ्गलाष्टक को क्रम से पढ़े। सौभाग्यवति इस समय पुष्पवृष्टि करती रहें तथा वादित्रनाद भी बीचों बी होता रहे।

पश्चात्—गृहस्थाचार्य नीचे लिखा हुआ तिलक मन्त्र प और मंत्र समाप्त होते ही कन्या का पिता, काका, मामा आ कोई व्यक्ति चन्दन आदि से वर को तिलक करे तथा उपस्थि सज्जन वर पर पुष्पवृष्टि करें।

तिलककरणमन्त्र

मङ्गलं भगवान् वीरो, मङ्गलं गौतमको गणी।
मङ्गलं कुन्दकुन्दाद्या, जैनधर्मोऽस्तु मङ्गलम्॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अस्य सर्वाङ्गशुद्धिं कुरुत कुरुत स्वाहा। यह श्लोक और मन्त्र पढ़कर वर के तिलक और नाल-बन्धन करना चाहिये।

दीर्घायुरस्तु शुभमस्तु सुकीर्तिरस्तु
सद्बुद्धिरस्तु धनधान्यसमृद्धिरस्तु।
आरोग्यमस्तु विजयोऽस्तु महोऽस्तु पुत्र
पौत्रोद्भवोऽस्तु तव सिद्धपतिप्रसादात्॥ १॥

यह श्लोक पढ़कर वर पर पुष्प फेंके। आचार्य नीचे लिखा मन्त्र पढ़े और उपरोक्त सज्जन ही वर को वस्त्राभूषण पहिनावें।

आभूषणदानमन्त्र

भूयात्सुपद्म - निधि-सम्भव- सारवस्त्रं,
भूयाच्च कल्पकुजकल्पित-दिव्यवस्त्रम् ।
भूयात्सुरेश्वर - समर्पित-सार - वस्त्रं,
भूयान्मयार्पितमिदं च सुखाय वस्त्रम् ॥ १ ॥

'ॐ परमेश्वराय नमः, इस मन्त्र को पढ़कर निर्यापकाचार्य वर के मस्तक और वस्त्रों पर अक्षतवृष्टि करे।

इसी समय वस्त्राभूषणों से सुशोभित और अक्षतसहित थाल को हाथ में लिये हुए कन्या की माता या अन्य सुहागिन वर के मुखचन्द्र का अवलोकन कर मोती मिले हुए धान के खीलों की अञ्जलि वर के ऊपर फेंके और मोती, श्वेत सरसों पुष्प, अक्षत तथा दीपकों के समूह सहित थाल लेकर वर की आरती और निछावर करे।

नोट—कहीं कहीं पर तोरण के समय पर द्वार पर लगे हुए काष्ठ के तोरण की चिड़ियों तथा तोतों से छड़ी का स्पर्श कराया जाता है और 'तोरण मार दिया' कहते हैं, यह ठीक नहीं।

तोरणस्पर्श का मतलब तो यही है कि मैंने इस द्वार में आने का अधिकार जमा लिया है। अतएव वर को लकड़ी से काष्ठ की चिड़िया नहीं मारना चाहिये। इसी प्रकार घोड़ी को तिलक लगाना, वस्त्र बांधना, नाल और नान बांधना आदि भी उचित नहीं है। लोकमूढता जान इनका त्याग कर देना चाहिये

इसके बाद वर अपने समूह सहित अपने डेरे पर जावे और कन्या के पिता वगैरह कुछ दूर पहुँचाने जावें।

दूसरे दिन का कर्त्तव्य

स्तम्भा (थाम) रोपणविधि

गृहस्थाचार्य वेदी की कटनी के पीछे मध्यभाग में ए
गड्ढा खुदवाकर उसके समीप कन्या को पूर्वमुख कर बिठा
और सात सुहागिनों को भी कन्या के पास में खड़ी कर दे
तदनन्तर गड्ढे के ऊपर चांवलों से स्वस्तिक बनाव
स्वस्तिकयुक्त मङ्गलकलश स्थापित करे। पश्चात् निर्यापकाचा
पूर्वोक्तविधि से तिलक और रक्षाबन्धन कर उन सातों सुहागि
से सुपारी, मूंग, दूर्वा, हल्दी, सरसों अक्षत तथा पैसा उ
गड्ढे और उस कलश में डलवा दे तथा कन्या के हाथ
कुछ चांदी भी कलश में डलवा दे।

पश्चात् कन्याको तिलकमंत्र से तिलक औ
रक्षाबन्धन मंत्र से नाल बांध एक लाल कपडे
नारियल लपेट आम्रपत्रादि सहित कर मोली बाधे और प
माला पहिनाकर उसे एक टोकनी मे रख मङ्गलकलश स्थापन
(पृष्ठ २०) पूर्वक स्वस्तिक सहित स्तम्भ पर उसे मजबूत रस्सो
बँधवा कर उस गड्ढे में आरोपित कर दे। वह स्तम्भ इत
ऊँचा होना चाहिये कि मण्डप से ऊपर निकल जावे।

मण्डप और वेदी की रचना

कन्या का पिता अपने घर के आंगन मे निम्नप्रकार मंड
रचना करे। चारों कोनों मे चार स्तम्भ रोपकर उनके सह
पाच-पाच कुम्हार के बर्तन रखे। उन बर्तनों मे कुछ मांगलि
वस्तुएं डलवा दे और मोली बँधवा दे तथा स्वस्तिक भी बना
फिर उन्हे चारों तरफ से बासों से वेष्टित कर बाध दे जिसमे हि
न सकें। पीछे उन पर इस प्रकार लाल वस्त्र लपेट गोटा लगा
जिससे बास और बर्तन जरा भी नजर मे नहीं आवें। चँदे
बांधकर कुण्ड वगैरह की रचना इसी मण्डप मे की जाय।

प्रदक्षिणा (भांवर) समय का कर्त्तव्य

सब से पहले गृहस्थाचार्य स्वयं या अन्य कोई व्यक्ति स्नान कर कन्या के घर विवाहमण्डप में जाकर वेदी, कुण्ड, अष्टद्रव्य, हवनसामग्री, समिध्, चतुष्कलशस्थापना, यन्त्र-स्थापना, शास्त्रस्थापना इत्यादि कार्यों को बिना किसी की अपेक्षा के कर लेवे।

पश्चात् वर और कन्या स्नान करके कोई फल लेकर अलग अलग श्रीजिनेन्द्रदेव के दर्शन करने को मन्दिरजी जावें। जब वर दर्शन करके बाजे-गाजे के साथ कन्या के घर आवे। तब-

कन्यायाः जननी वेगा-दागत्य पूजयेद् वरम्।
अक्षतान्स तत्पादौ भूषा-मुद्रादि चार्पयेन्मुदा ॥
कन्याया मातुलः प्रीत्या, वरं धृत्वा करेण वै।
मण्डलाभ्यन्तरं नीत्वा, कन्यामप्यानयेत्ततः ॥

अर्थात् —अक्षत, पुष्प और चतुर्मुख दीपक सहित थाल है हाथ में जिसके ऐसी कन्या की माता अपने मकान के बाहर आकर वर की आरती कर उसे वस्त्राभूषण मुद्रिका आदि प्रदान करे। कन्या का मामा वर को हाथ में पकड़कर मण्डप में लिवा लावे तथा कन्या को भी लिवा लाकर मण्डप में पहुंचा देवे।

इसके अनन्तर गृहस्थाचार्य-इस पद्धति में छपे हुए क्रम से मङ्गलाचरण, मङ्गलाष्टक और स्वस्त्यादि पढ़े। पश्चात् प्रारब्ध विवाह कर्म में आने वाले विघ्नों की शान्ति के लिये—

"ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वविघ्नशान्तिः
शान्तिं कुरुत कुरुत स्वाहा"

इस मन्त्र से पुष्पक्षेपपूर्वक दशों दिशाओं का बन्धन करे।

द्रोणायां परिपूरितान् प्रतिचतुः, कोणेषु पञ्चत्रिवैः ।
कुम्भान् न्यस्य सुमङ्गले विदधते, तेषु प्रसूनं वरम् ।।

ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्ममहापद्मतिगिञ्छकेशरिपुण्डरीकमहापुण्डरीकगङ्गासिन्धु-रोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकान्तासीतासीतोदानारीनरकान्ता-सुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदाक्षीराम्भोनिधिजलंसुवर्णघटप्रक्षिप्तं सर्वगन्धपुष्पाढ्यमामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झ्रौं झ्रौं हं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पंपं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं मःस्वाहा ।

यह मन्त्र पढ़ कर कलशों में थोड़ा जल डाल कर उनके जल को पवित्र करे। पश्चात्

"षट्कर्म के पालन में तुम्हारा दृढ़ बन्धन हो तथा तुम अपने कुल का भली प्रकार पालन और सम्वर्धन करो" इस प्रकार आशय को प्रतिपादन करने वाला कङ्कणबन्धन मन्त्र के समक्ष निर्वापकाचार्य स्वयं अपने हाथ से करे।

कङ्कणबन्धनमन्त्र

जिनेन्द्र-गुरु-पूजनं, श्रुतवचः—मुदा धारणं ।
स्वशील-यम-रक्षणं, ददन—सत्तपो-वृंहणम् ।
इति प्रथितषट्क्रिया, निरतिचार-मास्ता तवे—
त्यथ प्रथन-कर्मणि, विहितरक्षिकाबन्धनम् ।।१।।

आज तुम्हारे कर कमलों में, शोभित है पावन कंकण ।
यह पुनीत कङ्कणबन्धन है, जीवन भर का गठबन्धन ।।

यह कंकणबन्धन जीवन भर, नव-दम्पति का जीवनधन।
शुभ गृह-मन्दिर का गर्भित है, इससे मङ्गलमयी सृजन॥
शुभ षट्कर्मों के पालन का, द्योतक है इसका कण कण।
धर्म-पुण्य के द्वारा होगा, दम्पति-जीवन का सिञ्चन॥
जिनवर वेदी, के समक्ष दोनों इसको कर रहे ग्रहण।
करें युगल जोडी, की रक्षा, श्री जिनवर के दिव्यचरण॥

ओं जायापत्योरेतयो गृहीतपाण्योरेतस्मात् परम् आचतुर्थाद् आहोश्विद् आसप्तमाद् इज्या परमस्य पुरुषस्य, गुरूणामुपास्ति:, जिनप्रणीतशास्त्रेष्वभिरुचि:, स्वकीयशील यमाना रक्षणं, विश्राणनं वनीपकानां, निरोधश्चेच्छानाम् इत्येवं विधातुं प्रतिज्ञाया: सूत्रं कङ्कण-सूत्रव्यपदेशभाक् रजनीसूत्रं मिथुनस्य मणिबन्धे प्रणह्यते।

यह कङ्कणबन्धन षट्कर्म पालन करने की प्रतिज्ञा करने का चिन्ह है। यह वर और कन्या के दाहिने हाथ मे पहिनाया जाता है। यह पञ्चरङ्ग सूत को दुहरा कर हाथ मे दो आंटे देकर क्रमश. सात वा पांच गांठे लगाकर बांधा जाता है।

यन्त्राभिषेक (स्रग्धराच्छन्द)

मध्ये तेजस्ततः स्याद्, वलयमथ चतुःसंख्यकोष्ठेषु पञ्च।
पूज्यान् संस्थाप्य वृत्ते, तत उपरितने, द्वादशाम्भोरुहाणि॥
तत्र स्यु मंङ्गलान्यु—त्तमशरणपदान्, पञ्च पूज्यामरर्षीन्।
धर्मप्रख्यातिभाज-स्त्रिभुवनपतिना, वेष्टयेदं कुशाढ्यम्॥२॥

अष्टकर्म से रहित सिद्धपति, सिद्धशिला जिनका आगार।
आत्मा का रस स्वादन करते, परमागम सुख का भण्डार॥

जो महान मंगलकारी हैं, सर्व ऋद्धियों के दातार।
सिद्धों का यन्त्रस्थापन यह, महिमा-मण्डित मङ्गलकार।
ओं ह्रीं भूर्भुवः स्वरिह एतद् विघ्नौघवारकं यंत्रं वयं परिषिञ्चयामः
यह मन्त्र बोलकर सिद्धयन्त्र का अभिषेक करे।

अथ पूजन-प्रारम्भः

ॐ जय, जय, जय। नमोऽस्तु, नमोऽस्तु, नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरीयाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व—साहूणं॥

चत्तारि मङ्गलं—अरिहन्ता मङ्गलं, सिद्धा मङ्गलं, साहू मङ्गलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मङ्गल। चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।
(ॐ नमोऽर्हते स्वाहा) थाल में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिये।

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत् पञ्च नमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥१॥
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् परमात्मानं, स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः ॥०॥
अपराजित-मन्त्रोऽयं, सर्व विघ्न-विनाशकः।
मङ्गलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मङ्गलं मतः ॥३॥

एसो पञ्च णमोयारो, सव्वपावप्प—णासणो ।
मङ्गलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगलम् ॥४॥
अर्हं – मित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्ध-चक्रस्य सद्बीज, सर्वत प्रणमाम्यहम् ॥५॥
कर्माष्टक – विनिर्मुक्तं, मोक्ष-लक्ष्मी- निकेतनम् ।
सम्यक्त्वादि- गुणोपेतं, सिद्धचक्र नमाम्यहम् ॥६॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूतपन्नगाः ।
विष निर्विषता याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे ॥७॥

पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् (थाल मे पुष्पाञ्जलि क्षेपना)

उदकचन्दनतन्दुलपुष्पकै-श्चरुसुदीप-सुधूप-फलार्घकैः ।
धवल मंगलगान रवाकुले, जिनगृहे जिननाम यजामहे

ओं ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामधेयेभ्य' अर्घ्यं म् ।

— —

भाषा पूजा पीठिका

हो अशुद्ध या शुद्ध नर, सुस्थित दुस्थित कोय ।
पञ्च नमस्कारहिं जपे, सर्व पाप–क्षय होय ॥१॥
हो पवित्र अपवित्र वा, सर्व अवस्था मांहि ।
जो सुमरहि परमात्म-पद, सर्वशुद्धि ता माँहि ॥२॥
यह अपराजित मन्त्र है, विघ्न-विनाशक सर्व ।
सर्व मंगलों में प्रथम, मंगलदायक पर्व ॥३॥

सर्व पापनाशक महा, मन्त्र पञ्च नवकार।
सर्व मङ्गलों में प्रथम, मङ्गलदायक सार ॥४॥
अर्हं अक्षर ब्रह्ममय, वाचक पन - परमेश।
सिद्धचक्रमद् बीज यह, नमूं सदा सर्वेश ॥५॥
सिद्धचक्र वर्णन करों, वसु - विध कर्मविहीन।
मोक्ष-लक्ष्मी वास थल, समकितादि गुणलीन ॥६॥
विघ्नवर्ग झट भागते, शाकिनि भूत पलाय।
हालाहल निर्विष बने, जिनवर के गुण गांय ॥७॥

स्थाले पुष्पाञ्जलि क्षिपामः।

जल-चन्दन अक्षत पुष्परु नेवज सुखकारी।
दीप धूप फल अर्घ्य लेय कञ्चन मणिधारी॥
मङ्गलीक रव-पूरित, श्रीजिन मन्दिर मांही।
जजूँ सहस वसु नाम, महित जिननाम सदा ही ॥८॥

इति भगवज्जिनसहस्रनामभ्यः अर्घ्यम्

जल परम उज्ज्वल गन्ध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूँ।
वरधूप निर्मल फल विविधबहु, जन्म के पातक हरूँ॥
इहभांति अर्घ्य चढ़ाय नितभवि, करत शिवपंकति मचूँ।
अरिहन्त श्रुत सिद्धान्त गुरु, निर ग्रन्थ नित पूजा रचूँ॥

दोहा—वसुविध अर्घ्य सँजोयके, अति उछाह मन कीन।
जासों पूजों परम पद, देव शास्त्र गुरु तीन॥

ओं ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम्।

जल फल आठों दर्व, अर्घ्य कर प्रीति धरी है।
गणधर इन्द्रनि हूतें, थुति पूरी न करी है॥
द्यानत सेवक जानके, (हो) जगते लेहु निकार।
सीमन्धर जिन आदि दे, वीस विदेह मँझार॥
श्री जिनराज हो, भव-तारण-तरणजहाज॥

ओंह्रीं श्रीसीमन्धरादिविद्यमानविंशतितीर्थङ्करेभ्यःअर्घ्यम्।

यावन्ति जिन - चैत्यानि, विद्यन्ते भुवन—त्रये।
तावन्ति सततं भक्त्या, त्रिः परीत्य नमाम्यहम्॥

भाषा

वसुकोटिछप्पन लाख ऊपर, सहस सत्यानवे मानिये,
शत चार पै गिन ले इक्यासी, भवन जिनवर जानिये।
तिहुँलोक भीतर शाश्वते सुर, असुर नर पूजा करें,
तिन भवन को हम अर्घ लेकें; पूजि हैं भवदुख हरें॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्ध्यकृत्रिमजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यम्।

अथ सिद्ध पूजा

इन्द्रवज्राच्छन्द

सिद्धान् विशुद्धान् – वसु-कर्म-मुक्तान्,
त्रैलोक्य-शीर्षस्थित – चिद्विलासान्।
संस्थापये भाव – विशुद्धि-दातॄन्।
सन्मङ्गलं प्राप्य – समृद्धयेऽहम्॥ १॥